भारतीय भाषाएँ : चिंता से चिंतन तक

सम्पादक
सुधाकर पाठक

भारतीय भाषाएँ : चिंता से चिंतन तक

सम्पादक

सुधाकर पाठक

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

की त्रैमासिक पत्रिका

'हिन्दुस्तानी भाषा भारती'

में प्रकाशित

भारतीय भाषाओं, उप भाषाओं, बोलियों, लोक साहित्य एवं संस्कृति पर केन्द्रित लेखों का संकलन

सम्पादन सहयोग :

विजय कुमार शर्मा

सागर समीप • राजकुमार श्रेष्ठ

प्रकाशक :

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

पंजीकृत कार्यालय :

3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली–110034

दूरभाष : 09873556781, 09968097816

E-mail : info@hindustanibhashaakadami.com

hindustanibhashabharati@gmail.com

Website : www.hindustanibhashaakadami.com

Bhartiya Bhashayen : Chinta Se Chintan Tak

by Hindustani Bhasha Akadami

ISBN : 978-81-946521-3-7

© हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

प्रथम संस्करण : 2020

मूल्य : ₹ 200 $ 25

इस प्रकाशन के सर्वाधिकार हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के पास सुरक्षित हैं और पूर्व अनुमति के बिना प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से प्रयोग, पाठ एवं प्रसारण वर्जित है ।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी... एक परिचय

भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार, संवर्धन एवं संरक्षण के मुख्य उद्देश्य को केन्द्र में रखते हुए वर्ष 2015 में 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' की स्थापना हुई । अकादमी किसी सरकारी/गैर सरकारी संस्थान से वित्तीय सहयोग लिए बिना एक स्ववित्त पोषित संस्था के रूप में पूर्ण सक्रियता से पूरे भारत में भारतीय भाषाओं के संरक्षण-संवर्धन के लिए कार्य कर रही है । अकादमी का सूक्त वाक्य है, 'निजभाषोन्तौ राष्ट्रोन्नतिः' जिसका अर्थ है कि अपनी भाषा की उन्नति से ही राष्ट्र की उन्नति संभव है । अकादमी की यह यात्रा अनेकों अवरोधों को लांघते और नए-नए सोपानों को छूती हुई अनवरत जारी है । अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' अपने निर्बाध प्रकाशन के तीन वर्ष पूरे करके चौथे वर्ष में प्रवेश कर गई है । पत्रिका का प्रत्येक अंक किसी एक भारतीय भाषा, उपभाषा या बोली पर केन्द्रित विशेषांक होता है । पत्रिका में विभिन्न सरकारी पदों पर आसीन उच्चाधिकारियों, विद्वानों, भाषाविदों, शिक्षाविदों, वरिष्ठ पत्रकारों, वरिष्ठ साहित्यकारों के साक्षात्कार, हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के अंतर्संबंधों पर आधारित लेख तथा कई अन्य महत्वपूर्ण स्थायी स्तम्भ सम्मिलित होते हैं । इसकी विषयवस्तु के आधार पर यह एक शोध पत्रिका की तरह है और हिन्दी साहित्य जगत में इस पत्रिका का विशेष स्थान है । महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रतिष्ठित ऑनलाइन पोर्टल/लाइब्रेरी 'कविता कोश' ने इस पत्रिका के सभी अंकों को अपने 'ई-पत्रिका' कॉलम में स्थान दिया है, जहाँ जाकर पाठक पत्रिका के सभी अंक ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं।

भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति और सम्प्रेषण का माध्यम ही नहीं अपितु आत्म गौरव, राष्ट्र गौरव, आत्म सम्मान और राष्ट्र की पहचान की प्रतीक है । भाषा किसी भी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है । भारत की लगभग 197 भाषाएँ विलुप्त होने के कागार पर हैं । भारत में अभी लगभग 450 जीवित भाषाएँ हैं । हमारे देश की यह समृद्ध भाषाई विरासत गर्व करने योग्य है, लेकिन चिंता की बात है कि हमारे देश की 10 भाषाएँ ऐसी हैं जिसके जानकार 100 से भी कम लोग बचे हैं । इन भाषाओं में ज्यादातर भाषाएँ मूल निवासियों द्वारा बोली जाती हैं, लेकिन ये भाषाएँ खतरनाक ढंग से विलुप्त होती जा रही हैं । वहीं 81 भारतीय भाषाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है । जिसमें मणिपुरी, बोडो, गढ़वाली, लद्दाखी, मिजो, शेरपा और स्पिति शामिल हैं । ये सभी भाषाएँ अभी 'कमजोर' की श्रेणी में हैं इन्हें बचाए रखने के लिए संगठित प्रयास की जरूरत है। वर्तमान में भारतीय भाषाएँ अपने जीवन के सबसे गंभीर संकट के दौर से गुजर रही हैं और यह संकट उनके अस्तिव और भविष्य का है । इस स्थिति से निबटने के लिए अकादमी ने अपनी एक महत्वपूर्ण इकाई 'शिक्षक प्रकोष्ठ' का गठन किया है जिसमें राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के 600 से अधिक भाषा शिक्षक जुड़े हुए हैं । इस इकाई के माध्यम से अकादमी भारतीय भाषाओं के छात्रों और शिक्षकों के लिए विभिन्न प्रकार की कार्यशालाएँ, व्याख्यानमालाएँ और प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है । इन सभी योजनाओं से अलग अकादमी द्वारा भाषाओं के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए जो